>

Title: Need to provide psychologists in schools to check the traits of violent behavior in children.

श्री वीरेन्द्र कुमार (टीकमगढ़): सभापति महोदय, आज शिक्षा पद्धति और शिक्षा प्रणाली के तहत काफी बातें नियम 193 के अंतर्गत की गई चर्चा के अंतर्गत सामने आई हैं। इसी से संबंधित महत्वपूर्ण विषय की ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ।

आज बच्चों का छोटी-छोटी बातों पर हिंसक हो जाना साधारण बात हो गई है। बच्चों का चीजों को तोड़-फोड़ करना, गालियां देना व मारपीट करना रोज की घटना हो गई है। संयुक्त परिवार और दादी-नानी की कहानियों से बच्चों के मन में भाईचारा, विनम्रता बड़ों के प्रति आदर भाव जैसे सामाजिक मूल्य विकसित होते थे। जिनसे एक हद तक बच्चे भोगवादी संस्कृति से बचे रहते थे। सामाजिक मूल्य विकसित होते थे। जिनसे संयुक्त परिवारों के टूटने से बच्चों में अकेलापन, मानसिक तनाव तथा व्यक्तिगत पहचान खो जाने की व्याकुलता पनप रही है। वर्तमान समय में परिवारों में बच्चों से भावनात्मक रिश्ते समाप्त हो रहे हैं। यह निराशाजनक है कि बच्चों को अनेक प्रकार की भौतिकवादी सुविधाएं दे कर माता-पिता यह समझते हैं कि हमने अपने कर्त्तव्यों को पूरा कर दिया है। बच्चों के मनोभावों को समझने का प्रयास माता-पिता बिल्कुल नहीं करते हैं। बच्चा कम्प्यूटर पर क्या कर रहा है, वह किस तरह के हिंसक खेलों को कम्प्यूटर पर खेल रहा है यहा जानने की फुरसत भी माता-पिता के पास नहीं होती है। कम्प्यूटर पर हिंसक खेलों को खेलते-खेलते बच्चा वास्तविक जीवन में भी हिंसक हो जाता है।

परिवार, मित्र, परिवेश और शिक्षक बच्चों के व्यक्तिगत निर्माण में सहायक होते हैं। इनमें कहीं भी चूक बच्चों को गलत राह पर ले जा सकती है। आज हर माता-पिता अपने बच्चों में एक सुपर बच्चे की तलाश कर रहे हैं। पढ़ाई के बढ़ते दवाब के कारण भी बच्चे हिंसक हो रहे हैं अथवा आत्महत्या की तरफ बढ़ रहे हैं।

शिक्षा प्रणाली में मनोवैज्ञानिक प्रयोग की आवश्यकता है। प्रत्येक स्कूल में प्रत्येक कक्षा के लिए अलग-अलग मनोवैज्ञानिकों की नियुक्ति की जानी चाहिए जो प्रत्येक बच्चे की समस्याओं को समझ कर उसके अभिभावकों, साथियों और अध्यापकों के साथ मिल कर उसकी समस्या का समाधान कर सकें। बच्चों को गुणात्मक शिक्षा देना अति आवश्यक है। भारतवर्ष में शिक्षा धर्म है, कर्त्तव्य है न कि मार्केटिंग स्टंट है। अतः मेरा केंद्र सरकार से अनुरोध है कि विद्यालयों में नैतिक शिक्षा, व्यवहारिक शिक्षा को आगे बढ़ाना चाहिए। बच्चों, अध्यापकों तथ माता-पिता के बीच सौहार्दपूर्ण संबंधों का होना अति आवश्यक है। तभी बढ़ती हुई हिंसा को रोका जा सकता है।